P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-3* ISSUE-10* (Part-1) January 2019
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

गाँधीवादी आर्थिक दृष्टिकोण और वैश्वीकरण

नीतू चौधरी
सहायक आचार्य,
राजनीति विज्ञान विभाग,
राजकीय महाविद्यालय,
टोंक, राजस्थान

सारांश

कुछ दशकों पहले गांधी जी के बारे में सोचा जा रहा था कि जैसे–जैसे भूमंडलीकरण बढ़ेगा, जीवन का तकनीकीकरण, उपभोक्तावाद बढ़ेगा और गाँधीजी की याद धुंधली पड़ती जायेगी परन्तु हर गुजरते दिन के साथ गाँधीजी की मौजूदगी बढ़ती ही जा रही है। पहले गाँधीजी हिन्दुस्तान तक थे अब गाँधीजी पूरी दुनिया में फैल गए हैं। दरअसल पूंजीवाद के संकट ने गाँधीजी को ज्यादा प्रासंगिक बना दिया है। पूंजीवाद के मौजूदा संकट से स्पष्ट हो गया है कि यह महज पूंजी का संकट नहीं है, बल्कि यह विचारधाराओं का भी संकट है। समाजवाद के पतन और पूंजीवाद के संकट से भविष्य को लेकर असुरक्षा पैदा हो गई है।

गाँधीजी के अगर समूचे व्यक्तित्व को देखे तो वह बेहद पारम्परिक है। अगर उन्हें पढ़ने का जोखिम उठाएं तो लगेगा कि वह तकनीकीकरण, मशीनीकरण और आधुनिक किस्म के जनतंत्र के विरोधी हैं, लेकिन जब गहरे उतरकर देखते हैं तब पता चलता है कि उनका विरोध इनसे नहीं बल्कि समाज को किनारे करने से है। वह तकनीक के जरिए समाज में पैदा होने वाले विचलन के विरोधी हैं। गाँधीजी बड़े पैमाने पर पूंजी के भी विरोधी है। बड़ी पूंजी और मशीनीकरण के विरोध के पीछे भावना है कि समाज ज्यादा समरस, ज्यादा एकजुट, ज्यादा सम्पन्न और ज्यादा आत्मनिर्भर बने। जब तक समाजवाद नई चमक बिखेर रहा था और पूंजीवाद नई ऊचाईयां हांसिल कर कर रहा था तब तक गाँधीजी के विचार अप्रासंगिक लग रहे थे, लेकिन अब जब समाजवाद मौजूद नहीं है और पूंजीवाद संकट में फंसा है तो गाँधीजी की एक सदी पहले की प्रगतिहीन बातें बेहद मानवीय, बेहद सामाजिक और बेहद भविष्यकालिक लगने लगी है। गाँधीजी का आर्थिक दर्शन आज प्रासंगिक नजर आ रहा है। गाँधीजी के आर्थिक दर्शन में सबसे निचले व्यक्ति को सर्वाधिक महत्व दिया गया है। उन्होंने ग्राम स्वराज्य की अवधारणा पेश की। वह लघु उद्योगों को प्रश्रय देने के पक्षधर थे। वह पश्चिमी औद्योगिकीकरण की जगह भारतीय कुटीर उद्योगों को स्थापित करना चाहते थे।

मुख्य शब्द : भूमंडलीकरण, आधुनिक, कुटीर उद्योग, पूंजीवाद।

प्रस्तावना

''मैं ऐसे भारत के लिए कोशिश करूंगा जिसमें गरीब लोग भी यह महसूस करेंगे कि वह उनका देश है– जिसके निर्माण में उनकी आवाज का महत्व है। मैं ऐसे भारत के लिए कोशिश करूंगा, जिसमें उच्च और निम्न वर्गों का भेद नहीं होगा और जिसमें विविध सम्प्रदायों में पूरा मेलजोल होगा। ऐसे भारत में अस्पृश्यता या शराब और दूसरी नशीली चीजों के अभिशाप के लिए कोई स्थान नहीं होगा उसमें स्त्रियों को वही अधिकार होंगे, जो पुरूषों को होंगे और शेष सारी दुनियाँ के साथ हमारा सम्बन्ध शान्ति का होगा। यह है मेरे सपनों का भारत।''

–मोहनदास करमचंद गाँधी

महात्मा गाँधी का जीवन सामान्य से विशिष्ट बना है तथा परियोजनशील गत्यात्मकता का एकीकृत संकल्प है। गाँधी के निर्णय एवं विकल्प किसी व्यक्ति अथवा समाज विशेष की अस्मिता और संस्थिति के अंग नहीं। दक्षिण अफ्रीका एवं आगे चलकर भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के समय गाँधी ने आरोपित चुनौतियो को स्वीकार किया एवं उपादेय विकल्प प्रस्तुत किये। उन्होंने लोकपक्ष के समीकृत विकल्पों को अपने अनुभव एंव जीवंतता से अर्थपूर्ण प्रयोजनशील एवं गाह्य बनाया। गाँधीजी को किसी एक विधा में नहीं बाँधा जा सकता। जहाँ उन्होंने देश को स्वतंत्र कराने के लिए अपनी राजनीतिक विचारधारा दी और संघर्ष किया, वहीं उन्होंने धर्म, नीति और आर्थिक दृष्टिकोण भी प्रस्तुत करते हुए अपने सपनों के भारत के निर्माण का मार्ग प्रशस्त किया।

साहित्यावलोकन

गांधी अध्ययन, दूसरा संस्करण, संपादन मनोज सिन्हा, ओरियंट ब्लैकस्वॉन, पुस्तक को तीन भागों में विभक्त किया जा सकता है। प्रथम भाग में, गांधी के विचारों की ग्रांथिक व सांदर्भिक व्याख्या प्रस्तुत की गई है जो प्रमुखतः पाश्चात्य विचारकों के अध्ययन की पुनर्समीक्षा है। दूसरे भाग में हिन्द स्वराज पर विस्तृत चचा की गई है जिसे इस पुस्तक की विशेषता माना जा सकता है। तीसरे और अंतिम भाग में गांधी के सामाजिक–आर्थिक दर्शन की व्याख्या की गई है। कुल मिलाकर यह पुस्तक गांधी से संबंधित पांडित्यपूर्ण लेखों का संग्रह है।

"The words of Gandhi" महात्मा गांधी, रिचर्ड एटनबरो, न्यूमार्केट प्रेस, 19 अक्टूबर 2001, पुस्तक में गांधी के पत्रों, भाषणों और प्रकाशित लेखों से पुरस्कार विजेता निर्देशक रिचर्ड एटनबरो द्वारा चुने गए बीसवीं शताब्दी के सबसे महान व्यक्तियों के शब्द, दैनिक जीवन, सहयोग, अहिंसा, विश्वास और शांति पर पैगम्बर के कालातीत विचारों का पता लगाते हैं। यह पुस्तक और फिल्म गांधी निर्माता। निर्देशक रिचर्ड एटनबरों का परिणाम थी गांधी की आध्यात्मिक उपलब्धि और उनके कार्यों और उनके शब्दों के ज्ञान की लौ को जीवित रखने के लिए लंबी प्रतिबद्धता। वे ज्ञान और शांति के शब्द है।

अध्ययन का उद्दे□य

21वीं सदी सूचना तकनीक (आईटी) की सदी है। आज क युवाओं को इंटरनेट और सोशल मीडिया के बिना जीवन की कल्पना बेमानी सी लगने लगी है। राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी ऐसी ही स्थिति के प्रति आगाह करते थे, जिससे इंसान तकनीक से संचालित होने लगे। गाँधी का ग्राम स्वराज्य बुनियादी इकाई के स्तर पर मनुष्य की आत्मनिर्भरता और सार्वभौमता को पाने का उपक्रम है जब तक मनुष्य है, तब तक ग्राम स्वराज्य की अवधारणा प्रासंगिक है। आज जिस तरह से दुनियाभर में हिंसक गतिविधियां बढ़ रही है, गाँधी के 'सत्य अहिंसा के विचार' और भी प्रासंगिक होते जा रहे हैं।

आज भूमंडलीकरण का दौर है और अब राज्य उपनिवेशवाद का स्थान बहुराष्ट्रीय उपनिवेशवाद ने ले रखा है, गाँधी जी राज्य उपनिवेश से लड़े थे, हमें बहुराष्ट्रीय उपनिवेशवाद से जूझना है क्योंकि दैत्याकार बहुराष्ट्रीय कम्पनियो और उनके साम्राज्य विस्तार को बढ़ावा देने वाले विश्व बैंक, अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष और विश्व व्यापार संगठन की नापाक तिकड़ी का शिकंजा हम पर कसता जा रहा है। दरअसल गाँधी के अनुसार विकास के लिए बुनियादी शर्त थी कि हम अंदर से सबल बने, आंतरिक संसाधनों पर हमारी ज्यादा निर्भरता हो, निर्णय लेने का अधिकार हमारे हाथों में हो और हमारी सारी व्यवस्थाऐं स्वतंत्र स्फूर्त हो।

दरअसल गाँधी का विचार था कि हमारे दिमाग की खिड़कियां इतनी जरूर खुली होनी चाहिए कि हम बाहर की चीजों का लाभ उठा सकें, लेकिन साथ ही यह भी ध्यान रखना चाहिए कि हमारे दरवाजे इतने न खुल जाएं कि बाहर का भीषण अंधड़–तूफान हमारे अंदर दाखिल होकर हमारे परखच्चे उड़ा दे। भूमंडलीकरण के इस दौर में मानव के रहन सहन में बदलाव आया है। आज के माहौल में गाँधीजी के विचार खोते जा रहे हैं और उनकी प्रासंगिकता पर सवाल खड़े हो रहे हैं।

गाँधीजी एक राष्ट्र, एक युवा, एक नागरिक, एक किसान एक छात्र को शून्यता की भविष्यवाणी से अवगत बनाते हैं, जिसका एकमात्र उद्देश्य मानवता की सभी परम सीमाओं को लांघकर एक आदर्श राष्ट्र का निर्माण करना है।

आधुनिक समय में महात्मा गाँधी अपने राजनैतिक विश्लेषण और कार्यों के लिए सारे विश्व में भारत की पहचान बन गए हैं। उन्होंने चिन्तन और कार्य की कई प्रकार से व्याख्या की है और उनके विश्लेषणों को नवीन परिस्थितियों में समाचिन पाया गया है। महात्मा गाँधी को समझने के लिए उनके महत्वपूर्ण विचारों को समझना आवश्यक है। उन्होंने अपने संपूर्ण जीवन को एक प्रयोगशाला की तरह से देखा है और एक मौलिक विचारशील व्यक्ति के रूप में अपने विचार प्रकट किये हैं जो इस प्रकार है–

अहिंसा की अवधारणा

महात्मा गाँधी ने राजनीतिक चिन्तन में अहिंसा की अवधारणा को विशिष्ट स्थान दिलवाया और आज अहिंसा राजनीतिक शब्दावली का प्रमुख शब्द हे। सामान्य अहिंसा का अर्थ हिंसा या हत्या न करना है, लेकिन गाँधीजी ने अहिंसा की इससे व्यापक परिभाषा बताते हुए कहा कि किसी को न मारना भी अहिंसा का एक अंग हे। अहिंसा इसके अतिरिक्त कुछ और भी है– किसी के प्रति कुविचार, विद्वेष या क्रोध, किसी का अहित चाहना, किसी की वस्तु पर अधिकार करने की अनाधिकार चेष्टा करना, मिथ्या भाषण आदि। भावनाओं का त्याग की अहिंसा है। इसके अतिरिक्त वाणी और संवेगों पर नियंत्रण रखना भी अहिंसा ही है। अहिंसा नकारात्मक ही नहीं वरन् सकारात्मक भी होती है, अहिंसा में चार मुख्य तत्व है प्रेम, धैर्य, अन्याय या विरोध और वीरता। गाँधीजी की अहिंसा प्रेममय है।[1]

गाँधी की अहिंसा केवल नैतिक, आध्यात्मिक और धार्मिक क्षेत्र की ही अच्छी चीज नहीं है, बल्कि यह तो शत–प्रतिशत व्यवहारिक और समाजोपयोगी चीज है। अहिंसा का अर्थ यदि प्रेम होता है तो फिर वहां शोषण और उत्पीड़न का स्थान नहीं होगा। प्रेम और परिग्रह, प्रेम और उत्पीड़न प्रेम और विषमता, प्रेम और शोषण साथ–साथ नहीं चल सकते। गाँधीजी ने हिंसा का व्यापक और गंभीर अर्थ दिया। यदि हत्या हिंसा है तो शोषण भी हिंसा ही है। शोषण तो वस्तुतः इस युग की सबसे बड़ी शैतानियत और सबसे बड़ा अभिशाप है।[2]

इसलिए गाँधी की ग्रामस्वराज्य की कल्पना शोषण विहीन समाज की कल्पना है। हिन्द स्वराज्य नामक पुस्तक में गाँधीजी ने आधुनिक सभ्यता की जो तीखी आलोचना की है वह वस्तुतः विभिन्न प्रकार के शोषण पर आधारित हिंसक समाज की ही आलोचना है।

सर्वोदय संबंधी विचार

भारतीय परम्परा में सबके उदय की कल्पना प्राचीन समय से की जा रही है। भारतीय शास्त्रों में इसके कई उदाहरण मिलते हैं आर यह धारणा अलग–अलग प्रकार से प्रकट हुई है जैसे ईश्वर से प्रार्थना की गई है

कि ''सर्वे भवन्तु सुखिनेः सर्वे सन्तु निरामया। सर्वे भद्राणि पश्चन्तु मा कश्चिद दुखभाग्यवेद।'' अर्थात सभी सुखी हो, सभी निरोगी हो, सभी भद्र बने और किसी को भी दुख न हो। भारतीय संस्कृति की इस आध्यात्मिक प्रार्थना को आधुनिक समय में महात्मा गाँधी ने मूर्त स्वरूप प्रदान करने का प्रयास किया। उन्होंने सर्वोदयी समाज की कल्पना से एक ऐसे आदर्श समाज के निर्माण की बात की जिससे उपरोक्त प्रार्थना का सजीवीकरण हो सके।

सर्वोदय सर्व और उदय दा शब्दों से मिलकर बना है, इसके दो प्रमुख अर्थ है सबका उदय और सब प्रकार से उदय। सर्वोदय, उपयोगितावाद के अधिकतम व्यक्तियों के अधिकतम सुख से आगे सबके सुख की बात करता है। गाँधीजी धन का समान वितरण चाहते थे, जिससे सभी व्यक्तियों के मध्य में पूर्ण, आर्थिक समानता के सामाजिक आदर्श को प्राप्त किया जा सके। आर्थिक समानता का वास्तविक अर्थ है प्रत्येक को उसकी आवश्यकतानुसार प्रदान किया जाये।

पूँजीवादी व्यवस्था के संबंध में गाँधीजी का मत था कि पूँजीवाद स्वयं एक हिंसा है क्योंकि यह मालिक–मजदूर कटुता को बढ़ावा देती है। गाँधीजी पूँजीवादी राज्य व्यवस्था के भी विरोधी थे क्योंकि पूँजीवादी राज्य एकाधिकारवादी व अनैतिक बन जाता है तथा इससे समाज में वर्गभेद तथा वर्ग संघर्ष की स्थायी स्थिति बन जाती है जिसमें एक और साधन सम्पन्न व दूसरी और साधनहीन पैदा हो जाते हैं। पूँजीवादी व्यवस्था में सर्वोदय संबंधी विचार गौण हो जाते हैं।[2]

सत्याग्रह का सिद्धान्त

सभी प्रकार के अन्याय और शोषण के विरूद्ध शुद्धतम आत्मा की शक्ति के प्रयोग को सत्याग्रह कहा जाता है। सत्याग्रही अपनी आत्मा की शक्ति द्वारा अन्याय से लड़ना चाहता है। आत्मा की शक्ति प्यार की शक्ति है। इसका घृणा और ईर्ष्या से कोई मेल नहीं है। सत्याग्रह का अर्थ विरोधी को दबाना नहीं अपितु उसका हृदय परिवर्तन करना है। सत्याग्रही में अपने विरोधी की आत्मा को बदलने की शक्ति होती है। गाँधीजी के शब्दों में ''सत्याग्रह का अर्थ है कि विरोधी को पीड़ा देकर नहीं बल्कि स्वयं तकलीफ उठाकर सत्य की रक्षा करना।'' यह सच्चाई के लिए तपस्या है।

सम्पूर्ण इतिहास में गाँधीजी को छोड़कर अन्य किसी ने इतने व्यापक स्तर पर आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक क्षेत्र में सत्याग्रह का प्रयोग नहीं किया। गाँधीजी ने इस हथियार का प्रयोग न केवल भारतीय स्वतंत्रता के लिए किया, बल्कि समाज में फैली कुरीतियों जैसे जाति प्रथा अस्पृश्यता आदि के लिए भी किया, गाँधीजी ने कहा था कि सत्याग्रह मुख्य रूप से एक धार्मिक आंदोलन है। यह बुद्धि और प्रायश्चित की प्रक्रिया है। यह आत्म मंत्रणा, कष्ट सहन द्वारा शिकायतें दूर करने या सुधार करने के लिए काम में लाया जाता है। उनका कहना था कि केवल समाज के लिए इसका प्रयोग होना चाहिए, अपने व्यक्तिगत लाभ या स्वार्थों के लिए नहीं।[3]

सत्याग्रही को सभी प्रकार के कष्टों को सहने के लिए तत्पर रहना चाहिए। सत्याग्रह और स्वार्थ एक साथ नहीं टिक सकते। स्वयं कष्ट भोगना तथा अन्याय का विरोध करना ही सत्याग्रह है। इसका प्रमुख सिद्धान्त यही है कि हम दूसरों को कष्ट न पहुँचाये, बल्कि न्याय प्राप्त करने के लिए स्वयं कष्ट उठाएँ। सत्याग्रह का अर्थ होता है कि विरोधी को पीड़ा देकर नहीं, स्वयं कष्ट उठाकर सत्य की रक्षा करना।[4]

गाँधीजी कहते थे कि हमको पाप से लड़ना चाहिए, पापी से नहीं। पानी में ईश्वर का वास है, उसमें भी सत्य विद्यमान होता है। अतः पापी का भी हृदय परिवर्तन करके उसे अच्छा बनाया जा सकता है।

व्यक्तिगत सम्पत्ति और ट्रस्टीशिप का सिद्धान्त

ट्रस्टीशिप सिद्धान्त के अनुसार उत्पादन प्रक्रिया में सलंग्न समाज के विभिन्न वर्ग सामाजिक रूप से उत्तरदायी प्रबंधकों की तरह काम करेंगे, इसका अर्थ यह था कि पूंजीपति मजदूर, जमींदार, किसान और सरकार सभी को इस तरह काम करना चाहिए, जिससे अधिक से अधिक उत्पादन बढ़े और अधिक से अधिक समाज का कल्याण हो, विशेष रूप में मजदूरों और किसानों का कल्याण, यह सिद्धान्त उत्पादन के साधनों के निजी स्वामित्व को मान्यता देता था, लेकिन ऐसा करने के बाद वह इस व्यवस्था के समाज के कल्याणवादी संदर्भ पर ज्यादा जोर देता था।[5] इस सिद्धान्त के माध्यम से धन का समान वितरण कर नक्सलवाद जैसी समस्याओं को बढ़ने से रोका जा सकता है।

ग्राम स्वराज्य

गाँधीजी की ग्राम स्वराज्य की कल्पना में एक पूर्ण प्रजातंत्र की स्थापना की जायेगी, जो अपनी अहम जरूरतों के लिए अपने पड़ौसियों पर भी निर्भर नहीं रहेगा और फिर भी बहुतेरी जरूरतों के लिए जिनमें दूसरों का सहयोग अनिवार्य होगा। वह परस्पर सहयोग से काम लेगा। इस तरह हर एक गाँव का पहला काम यह होगा कि वह अपनी जरूरत का तमाम अनाज और कपड़े के लिए कपास खुद पैदा कर ले। हर एक गाँव में गाँव की अपनी एक नाटकशाला, पाठशाला और सभा भवन रहेगा। पानी के लिए उसका अपना इंतजाम होगा। जाँत–पाँत और क्रमागत अस्पृश्यता जैसे भेद इस ग्राम समाज में बिल्कुल न रहेंगे। गाँधीजी ऐसी समाज व्यवस्था में स्त्री–पुरूष की समानता भी देखते थे और इसीलिए उन्होंने स्त्रियों की स्थिति को सुधारने के भी अनेक प्रयत्न किये।

स्वराज्य एवं लोकतांत्रिक शासन पद्धति

गाँधीजी स्वराज्य एवं लोकतंत्र को एक–दूसरे के पर्याय के रूप में प्रयोग करते थे। उन्होंने कहा था कि स्वराज्य से मेरा आशय भारत सरकार से है जिसे सर्वाधिक संख्या में ऐसे लोगों ने चुना हो जिन्होंने शारीरिक श्रम से राष्ट्र की सेवा की हा और जिन्होंने मतदाता सूची में अपना नाम लिखवाने का कष्ट किया हो। चुनाव पद्धति के बारे में उनका विचार था कि प्रत्येक ग्राम के लोग ग्राम पंचायतों का चुनाव करें। ग्राम, जिला पंचायतें राज्य, राज्य स्तरीय पंचायतें चुनें और राज्य स्तरीय पंचायतें राष्ट्रीय पंचायत का चनाव करे। चूँकि उनके पंचायतीराज में प्रथम इकाई गाँव होगी, इसलिए छोटे से छोटे ग्रामीण के हित नजरअंदाज नहीं हो पायेंगे।'

गाँधीवादी आर्थिक दृष्टिकोण को वैश्वीकरण के संदर्भ में समझने के लिए पहले वैश्वीकरण की प्रवृत्ति को समझना आवश्यक है।

वैश्वीकरण क्या है?

वैश्वीकरण विभिन्न देशों के लोगों, कंपनियों और सरकारों के बीच बातचीत और एकीकरण की प्रक्रिया है। वैश्वीकरण में सम्पूर्ण विश्व को एक बाजार का रूप प्रदान किया जाता है। वैश्वीकरण से आशय विश्व अर्थव्यवस्था में आये खुलेपन, बढ़ती हुई अन्तनिर्भरता तथा आर्थिक एकीकरण के फैलाव से है।

इसके अन्तर्गत विश्व बाजारों के मध्य पारस्परिक निर्भरता उत्पन्न होती है तथा व्यवसाय देश के सीमाओं को पार करके विश्वव्यापी रूप धारण कर लेता है। वैश्वीकरण के द्वारा ऐसे प्रयास किये जाते हैं कि विश्व के सभी देश व्यवसाय एवं उद्योग के क्षेत्र में एक दूसरे के साथ सहयोग एवं समन्वय स्थापित करें।[5]

वैश्वीकरण के तत्व

1. व्यापार प्रतिबंधों को कम करना ताकि वस्तुओं और सेवाओं का आवक जावक निर्बाध गति से हो सके।
2. एक ऐसे वातावरण का निर्माण किया जाये, जिससे विभिन्न देशों के बीच पूंजी का स्वतंत्र रूप से प्रवाह हो सके।
3. ऐसे वातावरण विकसित करना, जिससे प्रौद्योगिकी का स्वतंत्र रूप से प्रवाह हो सके।
4. ऐसी व्यवस्था विकसित करना, जिससे विश्व के विभिन्न देशों के मध्य श्रम का निर्बाध आवागमन हो सके।

भारत में वैश्वीकरण का सकारात्मक प्रभाव

1. उत्पादों की किस्में – कई बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ भारत में अपनी पूंजी निवेश करती है। अतः भारतीय उपभोक्ता गुणात्मक तथा कई किस्मों के उत्पाद न्यून दरों पर प्राप्त कर सकते हैं।
2. आधारभूत ढांचों में विकास – इस योजना के कारण आधारभूत ढांचों की स्थिति में मानक रूप से सुधार हुआ है। सरकार स्वर्ण चतुर्भुज का निर्माण कर रही है जो सभी मुख्य शहरों को जोड़ेगा। संचार क्षेत्र में अधिक प्रगति देख सकते हैं।
3. भारतीय कम्पनियों के लिए वृद्धि– इस योजना के कारण निजी क्षेत्राक अधिक तेजी से लाभ कमाते हैं। अब निजी क्षेत्राक अन्य देशों से कच्चे माल तथा तकनीक के आयात के लिए स्वतंत्र है। आयात तथा निर्यात पर से कई प्रतिबंध हटा लिये गये हैं। वैश्वीकरण कुछ योग्य बड़ी भारतीय कम्पनियाँ रखता है जो अपने आप बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के रूप में उभरी है। टाटा मोटर्स, इन्फोसिस, रेनबेक्सी, एशियन पेन्ट आदि कुछ कम्पनियां ह जो अपने विश्व विस्तार संचालन में फैल रही है।
4. आधुनिक व्यापार का वैश्विक रूप – वैश्वीकरण के कारण व्यापार अब विश्व में आने लगा है। अब भारत माल का आयात व निर्यात करता है। हमारे व्यवसाय भी सभी प्रकार के विदेशी बाजारों में प्रवेश कर चुके हैं।
5. होड़ में वृद्धि – वैश्वीकरण की प्रक्रिया तथा उदारीकरण विभिन्न उद्योगों के बीच होड़ में वृद्धि करते हैं। यह होड़ निजी तथा सार्वजनिक क्षेत्राक की दक्षता तथा उत्पादकता में वृद्धि करते हैं।

वैश्वीकरण के नकारात्मक पहलू

1. श्रमिकों का शोषण – वृहद बहुराष्ट्रीय कम्पनियों को विस्तृत वैश्विक सम्पर्क के साथ सस्ती वस्तुओं के लिए उनके लाभ को बढ़ाने के क्रम में देखा जाता है। श्रमिकों को अधिक घण्टे काम करने तथा श्रेष्ठ समय के दौरान नियमित आधार पर रात्री पाली में काम करने के लिए मजबूर किया जाता है।
2. कृषि के लिए कम महत्व– वैश्वीकरण की नई आर्थिक योजना भारतीय अर्थव्यवस्था में कृषि क्षेत्राक के महत्व को नकारती है।
3. निर्धनता उपशमन में असफल – यह गरीबी की समस्या को सुलझाने में असमर्थ है जो कि भारत की बड़ी आर्थिक समस्या है। वैश्वीकरण की प्रक्रिया अमीर तथा गरीब के बीच अंतर को बढ़ाती है।
4. लघु उद्योगों के लिए समस्या – बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ उन वस्तुओं के निर्माण में जो लघु पैमाने के लिए आरक्षित थी के उत्पादन में प्रवेशित है। लघु पैमाना उद्योग बहुराष्ट्रीय कम्पनियों की होड़ करने में असमर्थ होते हैं।
5. प्रतिस्पर्धा और अनिश्चित रोजगार – वैश्वीकरण तथा प्रतिस्पर्धा का दबाव श्रमिकों के जीवन को पूर्ण रूप से परिवर्तित करता है। बढ़ती प्रतिस्पर्द्धा के विरूद्ध अधिकांश कर्मचारी इन दिनों कार्य करने वाले मजदूरों को लचीले बनाते हैं। इसका अर्थ है कि श्रमिकों की नौकरियाँ अधिक समय तक सुरक्षित नहीं है।[6]

वैश्वीकरण बीसवीं सदी में उभरी एक अनिवार्य तथा बहुआयामी घटना है। सामान्य अर्थ में वैश्वीकरण एक ऐसी प्रक्रिया है, जिसका उद्देश्य एक दूरीविहीन तथा सीमाविहिन विश्व का निर्माण करना है। वैश्वीकरण ने पूँजीवादी अर्थव्यवस्था को बढ़ावा दिया है। इसने अमीर व गरीब के बीच की खाई को बढ़ाया है। पूँजीवाद ने आदिवासी इलाकों में भी अपनी पैठ बना ली है। आदिवासी इलाकों को भी ये अपने घेरे में लेकर उनकी संपदा को स्रोत और उन आदिवासियों को उपभोक्ता बना देना चाहता है। यह एक दोहरे शोषण की नीति है। आदिवासी अपने आदिकालिक जीवन की रक्षा के लिए पूरे जी जान से लड़ रहे हैं। विदेशी कंपनियां तृतीय–विश्व में लोगों की आवश्यकतायें कृत्रिम रूप से बढ़ा रही है तथा इन विकासशील देशों में आय के सीमित स्रोत तथा संसाधनों के अभाव के कारण, जनता अवैध कार्यों व तरीकों से आय अर्जित कर अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति में प्रयत्नशील हे। यदि हम गाँधीवादी विचारधारा को देखे तो गाँधीवाद इस संदर्भ में आत्म अनुशासन व स्वनियंत्रण की बात करता है। भौतिक विकास की अपेक्षा व्यक्ति के नैतिक व आध्यात्मिक विकास को महत्वपूर्ण मानता है। वैश्वीकरण की नकारात्मक प्रवृत्तियों पर काबू पाने के लिए गाँधीजी का स्वदेशी प्रेम महत्वपूर्ण साबित हो सकता है। गाँधीजी ने यंत्रों का विरोध और स्वदेशी का आग्रह जिस रूप में किया उसमें भारत की विपन्नता को दूर करने का

स्पष्ट संकल्प दिखाई देता है। गाँधीजी ने अपने विचार को सजीव करने के लिये 'स्वदेशी मंत्र' समाज को दिया। कोई भी देश अपने अस्तित्व को तभी बचा सकता है। जबकि मूल रूप से इस स्वदेशी भावना को अंगीकार कर ले।

शांति अहिंसा के विकल्पहीन अस्त्र से महात्मा गाँधी ने विश्व के सर्वशक्तिशाली ब्रिटिश साम्राज्य के उपनिवेशवाद से भारत को मुक्त कर स्वतंत्रता प्रदान करके मजबूत किया था। महात्मा गाँधी का राजनैतिक अस्त्र था शांतिपूर्ण असहयोग आंदोलन तथा बहिष्कार, सविनय अवज्ञा आंदोलन से महात्मा गाँधी ने ब्रिटिश साम्राज्य की जड़ों को हिला दिया था तथा एशिया एवं अफ्रीका के उपनिवेशों को स्वतंत्र करने को बाध्य कर दिया था।

विश्व में हिंसा के स्थान पर लोकतांत्रिक शांति, अहिंसा तथा त्याग एवं बलिदान का मार्ग चुना था। इसी गाँधीवादी दर्शन के अस्त्र का प्रयोग कर मार्टिन लूथर, किंग जूनियर ने संयुक्त राज्य अमेरिका में अश्वेतों अर्थात् नीग्रो समुदाय को त्याग एवं बलिदान से नागरिक अधिकार दिलाया था।

आर्थिक प्रवृत्ति समाज व्यवस्था का एक महत्व का अंग है। सामान्य तौर पर मनुष्य का अधिकतर समय अपनी दैनिक भौतिक आवश्यकताओं के साधन जुटाने और उनकी व्यवस्था करने में जाता है। अतः आर्थिक रचना कैसी है, इसका समाज की गतिविधि पर उसके निर्विघ्न अस्तित्व पर तथा स्थायित्व पर बहुत असर पड़ता है। समाज में आर्थिक सत्ता आम लोगों के हाथ में हो जनता स्वयं अपनी आर्थिक गतिविधियों की निर्णायक हो, हर गाँव स्वायत्त और स्वावलंबी था। आर्थिक व्यवस्था लोगों के हाथ में होनी चाहिए, किसो बाहरी शक्ति के हाथ में नहीं। इसका मतलब यह है कि भोजन वस्त्र मकान आदि प्राथमिक आवश्यकता के मामले में ''हरेक गाँव को अपने पांव पर खड़ा होना होगा, यथासंभव अपनी जरूरतें खुद पूरी कर लेनी होगी।'' जैसा गाँधीजी ने कहा था ''सच्चा स्वराज्य केवल मुठ्ठीभर लागों के सत्ता पर बैठ जाने से नहीं होगा वरन् बहुसंख्यक लोगों में उस शक्ति के विकास से होगा जिससे सत्ता का दुरूपयोग होने पर वे उसका प्रतिरोध कर सकें।'' यह शक्ति लोगों में तभी आ सकेगी जब केवल प्रशासनिक दृष्टि से ही नहीं आर्थिक दृष्टि से भी, कम से कम अपनी बुनियादी आवश्यकताओं के मामले में लोग स्वायत्त हो। इसलिए गाँधीजी ने बीसवीं सदी के केन्द्रित उद्योगवाद के वातावरण में भी खादी ग्रामोद्योग का प्रतिपादन किया था और चरखे को क्रांति का प्रतीक बताया था।[6]

यह धारणा बहुत भ्रामक है कि किसी भी देश की शक्ति उसकी केन्द्रीय सत्ता के सर्वशक्तिमान होने में है। खासकर प्रजातंत्र में शासन जितना लोगों के निकट होगा और लोगों को अपनी व्यवस्था खुद चलाने का जितना ज्यादा मौका मिलेगा, उतना ही राष्ट्र मजबूत होगा।

महात्मा गाँधी की अर्थव्यवस्था व अर्थशास्त्र के बारे में बहुत मौलिक सोच थी। यह सोच उस समय के प्रचलित विचारों की परवाह न कर सीधे–सीधे ऐसी नीतियों की मांग करती थी जिससे गरीबों को राहत मिले। साथ ही उन्होंने ऐसे सिद्धान्त अपनाने को कहा जिनसे दुनिया में तनाव व हिंसा दूर हो तथा पर्यावरण की रक्षा सबसे महत्वपूर्ण थे। वह इसी के अनुकूल आर्थिक नीतियों की बात करते थे। वह इसी के अनुकूल आर्थिक नीतियों की बात करते थे। उन्होंने अर्थनीति और नैतिकता में कभी भेद नहीं किया। गाँधीजी ने स्पष्ट लिखा मुझे स्वीकार करना चाहिए कि मैं अर्थ विद्या और नीति विद्या में कोई भेद नहीं करता। जिस अर्थविद्या से व्यक्ति या राष्ट्र के नैतिक कल्याण को हानि पहुचती हो उसे मैं अनीतिमय और पापपूर्ण कहूंगा। उदाहरण के लिए जो नीति एक देश को दूसरे देश का शोषण करने की अनुमति देती है वह अनैतिक है। जो मजदूरों को योग्य मेहनताना नहीं देते ओर उनके परिश्रम का शोषण करते हैं उनसे वस्तुएं खरीदना या उन वस्तुओं का उपयोग करना पाप है। उन्होंने शोषण विहीन व्यवस्था की मांग रखी ताकि सबकी बुनियादी जरूरतें पूरी हों। उन्होंने कहा कि गरीब लोगों को भी उत्पादन के साधनों पर नियंत्रण मिले ताकि उनका शोषण न हो। गांधी ने लिखा मेरी राय में न केवल भारत की बल्कि सारी दुनिया की अर्थरचना ऐसी होनी चाहिए कि किसी को भी अन्न और वस्त्र के अभाव में तकलीफ न सहनी पड़े।

प्राय यही माना जाता है कि निरन्तर आर्थिक विकास व वृद्धि से ही दुनिया से गरीबी व अभाव दूर होगी, लेकिन महात्मा गांधी ने यह पहचान लिया था कि इस तरह के आर्थिक विकास के तहत गरीबी व विषमता बढ़ने की संभावना भी मौजूद रहती है। अतः उन्होंने आर्थिक विकास को नहीं बल्कि गरीब आदमी की बुनियादी आवश्यकताओं को अपनी आर्थिक सोच का केन्द्र बनाया।

महात्मा गांधी का कथन है– मैं यह नहीं चाहता कि मेरे घर को ऊंची चारदीवारों से घेर दिया जाये और खिड़कियों को मजबूती से बंद कर दिया जाये, मैं चाहता हूं कि सभी संस्कृतियों का प्रवाह मुक्त रूप से मेरे घर में हो परन्तु मैं उस प्रवाह में उखड़ने से इनकार करता हूं। गांधीवादी दर्शन जीवन के विभिन्न पहलुओं के लिए शक्ति एवं प्रेरणा का निरन्तर बहने वाला एक ऐसा स्रोत है, जो शताब्दियों तक प्रकाश स्तम्भ के रूप में बना रहेगा। बल्कि वैश्विक गांव एवं बाजार आधारित अर्थव्यवस्था के इस दौर में गांधीवाद की प्रासंगिकता और बढ़ गयी है। वैश्वीकरण की उपज होने के कारण गांधी जी स्वयं इसके नफे–नुकसान से भली भांति परिचित थे। वैश्वीकरण को प्राचीन घटना मानते हुए वे आश्वस्त थे कि विभिन्न संस्कृतियों के संश्लेषण से भारतीय संस्कृति को कोई खतरा नहीं है। वे पहले ही भांप चुके थ कि वैश्विक समाज के निर्माण के साथ ही संप्रभु राष्ट्रों को न सिर्फ राजनैतिक एवं सांस्कृतिक उपनिवेशवाद से बल्कि औद्योगिकीकरण के साथ ही वर्ग संघर्ष एवं पर्यावरणीय समस्या से भी रूबरू होना पड़ेगा जो समय के साथ सत्य सिद्ध हुआ। साम्यवादी रूस के पतन के साथ ही वैश्विक अर्थव्यवस्था पर पूंजीवादी विचारधारा का प्रभुत्व हो गया परन्तु वालस्ट्रीट संकट ने एक बार फिर गांधीवाद को प्रासंगिक बना दिया है कि समाज को अपनी अधिकतम आवश्यकताओं के लिए आत्मनिर्भर एवं न्यूनतम हेतु परस्पर

निर्भर होना चाहिए। डब्ल्यूटीओ में विकसित एवं विकासशील देशों के मध्य कृषि सब्सिडी को लेकर चल रही गर्मागर्म बहस, किसानों के हित रक्षा संबंधी गाँधीजी के विचारों की प्रासंगिकता को रेखांकित करता है।

आधुनिक विश्व के विचारों के साथ महात्मा गांधी के विचारों का संश्लेषण एक अधिक समग्र और एकीकृत समाज का निर्माण करेगा। यह अधिक खुशी प्रदान करेगा, अधिक परोपकारी आर्थिक अधिशेष उत्पन्न करेगा और अब जो हमारे लिए उपलब्ध है उससे अधिक समतावादी समाज लाएगा।

महात्मा गांधी ने कभी भी गांधीवादी अर्थशास्त्र के नाम से प्रसिद्ध साहित्य का अंग नहीं बनाया। उन्होंने न तो अर्थशास्त्री होने का दावा किया और न ही अर्थशास्त्र में प्रशिक्षित किया गया। फिर भी उन्होंने अपने जीवन में समय के विभिन्न पहलुओं पर अर्थशास्त्र पर अपने विचार व्यक्त किए। अर्थशास्त्र पर उनके विचारों ने उनके लेखन और विचारों में अभिव्यक्ति पाई।

अर्थशास्त्र आर नैतिकता का संश्लेषण

थॉमस वेबर का कहना है कि गांधी, रस्किन की पुस्तक 'अनटू दिस लास्ट' से बहुत प्रभावित थे और यह कहना गलत नहीं होगा कि रस्किन गांधीवादी आर्थिक विचारों के जनक थे। गांधी ने तीन बुनियादी सच्चाईयों के तहत 'अन टू दिस लास्ट' को शिक्षाआ को संक्षेप में कहा–

1. व्यक्ति की भलाई सभी की भलाई में निहित है।
2. प्रत्येक व्यक्ति को अपने काम से आजीविका कमाने का अधिकार है और श्रम की गरिमा है, जिसका अर्थ है कि उच्च और निम्न श्रम नाम की कोई चीज नहीं है।
3. मिट्टी और हस्तशिल्पियों का जीवन जीने लायक है।

गांधी को गहराई से प्रभावित करने वाले एक अन्य लेखक लियो टॉलस्टॉय थे। टॉलस्टॉय की कृति 'द किंगडम ऑफ गॉड विदिन यू' ने गांधी पर एक अमिट छाप छोड़ी। गांधी ने स्वीकार किया कि टॉलस्टॉय के काम की गहन नैतिकता, स्वतंत्र सोच और सत्यता ने उन्हें और बाकी सब कुछ महत्वहीन कर दिया।

निश्कर्श

गांधी ने दावा किया कि ''सच्चा अर्थशास्त्र कभी भी उच्चतम नैतिक मानक के खिलाफ नहीं होता है क्योंकि सभी सच्चे नैतिकता को भी अच्छा अर्थशास्त्र होना चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *राजकिशोर : गाँधी मेरे भीतर, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2010, पृ.सं. 64–65*
2. *यंग इंडिया, 11 दिसम्बर 1931, नवजीवन, 20 दिसम्बर, 1928*
3. *किशोर, गिरिराज : हिन्द स्वराज, गाँधी का शब्द अवतार, पृ.सं. 155*
4. *त्रिपाठी, माधवी : गांधी की विरासत, निरन्तरता एवं परिवर्तन, पृ.सं. 59*
5. *Accouting in Hindi.com*
6. *hindiknowleadgeuniverse online.com*
7. *रावत, ज्ञानेन्द्र : गांधी व्यक्तित्व विचार और गांधीवाद, श्री नटराज प्रकाशन, नई दिल्ली, 2006 पृ.सं. 68*
8. *https:||www.mkgandhi.org*